आचार्य द्विवेदी ने सामान्य से दिखनेवाले विषयों को अपने निबंधों का आधार बनाया है। जब वही विषय इनके विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण क्षमता से उद्भासित होजाते हैं तो चमत्कारिक निबंधों का सृजन होता है। द्विवेदी जी के निबंधों में विषय सामान्य हैं किन्तु उनकी प्रस्तुति शैली विशिष्ट है कि निबंध पठनीय और आकर्षक हो जाते हैं। उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इन्हें हिन्दी निबंध साहित्य का डॉ० जॉनसन कहा जाता है। इसका है कि डॉ० जॉनसन के अंग्रेजी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार थे जिनका प्रभाव संपूर्ण अंग्रेजी के निबंध साहित्य पर पड़ा है।

बाहर आ जाता है और जो ठोस पदार्थ है वह अन्दर चला जाता है। किन्तु इस ठोस पदार्थ का अर्थ तो दूध नहीं हो हो सकता है। अतः नीर-क्षीर विवेक का कथन सत्य की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

हंसों के ही सम्बन्ध में एक और बात कही जाती है कि हंस मोती चुगते हैं। प्रश्न उठता है कि हंस आखिर कहाँ रहते हैं कि भोजन के लिए मोती सहज ही उपलब्ध हैं? हंसों का प्रिय स्थान है मानसरोवर जो कैलाश की तलहटी में अवस्थित है किन्तु वहाँ मोती नहीं पाये जाते। तो उनके खाने के लिए मोती कहीं बाहर से तो आ नहीं सकते। ऐसे में मोती चुगने वाला कथन भी सत्य प्रतीत नहीं होता। किन्तु भारतीय मनीषा भला इतना बड़ा झूठ कैसे कह सकता है? तब मोती का अर्थ मानसरोवर का शुद्ध एवं निर्मल जल जो मोतियों के समान श्वेत धवल है - ले लगा सकते हैं। किन्तु यह तो पेय है खाद्य नहीं। प्रश्न जहाँ से आरम्भ हुआ वहीं वापस पहुँच गया प्रतीत होता है।

पुनः जब संस्कृत साहित्य का अध्ययन करते हैं तब 'नैषध चरित' में एक हंस राजा नल से कहता है - "पानी में पैदा होने वाले पौधों और बेलों के फलों और कन्दों से मैं मुनियों के समान अपना जीवन निर्वाह करता हूँ।" उसी प्रकार 'भामिनी विलास' में नायक हंस से कहता है - "हे राजहंस जिसके आश्रय में रहकर तूने मृणालदण्डों को खाया, जलपान किया और नलिनी का स्वाद लिया, उस सरोवर का तू किस प्रकार प्रत्युपकार करेगा?" इसी से मिलते-जुलते भाव कालिदास ने भी 'विक्रमोर्वशी' और 'मेघदूत' में कहे हैं। चूँकि हंस जलाशय में रहते हैं और जलाशय में मृणाल अर्थात कमल पाये जाते हैं। ये मृणाल हंसों को

जब तोड़ा जाता है तब उसमें से सूत के समान एक उजला पदार्थ निकलता है जिसे हंस बड़े ही चाव से खाते हैं। वैसे ही जल में पनपने वाले पौधे और उनकी जड़ों को भी वे खाते हैं। इसी प्रकार मृणालदंडों में थोड़े अंतराल पर गांठें होती हैं। इन गांठों में उजले रंग का द्रव भरा होता है। यह भी हंसों का प्रिय खाद्य या पेय हो जाता है। मृणाल डंडों की गांठों से निकलने वाले उजले दूध सदृश द्रव को हंस बड़ी ही कुशलता से पी जाते हैं। इनके इस पीने में सरोवर का जल आड़े नहीं आता। वे पानी को छोड़ कर मृणाल डंडों की गांठों का उजला द्रव अर्थात दूध पी जाते हैं और सरोवर के जल को छोड़ देते हैं। लगता है इसी प्रकार के नीर क्षीर पृथक्करण से विद्वानों ने नीर-क्षीर विवेक का सृजन किया होगा क्योंकि पानी के भीतर से मृणाल दंडों के दूध को पीने की बात तो सिद्ध हो जाती है। धीरे-धीरे यह बात गौण हो गयी और सामान्य दूध और पानी के मिश्रण से दूध को अलग कर पीने की बात प्रधान हो गयी जिसे हम प्रतिदिन उदाहरण स्वरूप प्रयोग करते हैं।

प्रस्तुत निबंध में यद्यपि एक अत्यंत प्रचलित किंवदंती के सत्य की परीक्षा का प्रयास किया गया है किंतु यह निबंध हिंदी निबंधों में विश्लेषण क्षमता पैदा करने का प्रयास भी है। द्विवेदी जी यह बतलाना चाहते हैं कि निबंध में विश्लेषण की प्रक्रिया कैसे होनी चाहिए और सत्य एवं तथ्य पर कैसे विचार किया जा सकता है। आधुनिक निबंधों की दृष्टि से यह निबंध एक मील का पत्थर प्रतीत होता है।